शणै गोयंबाब भाषा एवं सहित्य महाशाला

गोआ विश्वविद्यालय,गोआ

विषय - भाषा और साहित्य:सामजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण (HIN-528)

(नावशी गाँव का सर्वेक्षण रिपोर्ट)

नाम-भरत भूषण

कक्षा- एम.ए (हिंदी)प्रथम वर्ष ,द्वितीय सेमेस्टर

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

प्रस्तावना भारत देश की विशेष पहचान उसके ग्रामीण संस्कृति और परिवेश से होती है ।भारत एक कृषि प्रधान ,महान मूल्य,और सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय पर अधारित एक महान देश है ।देश की अधिकतर आबादी ग्रामीण जनो की है।भारत देश प्रसाशनिक सुविधा के लिये 28 राज्यो और 8 केंद्रशाशित प्रदेशो में विभक्त किया गया है ।भारत पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध मे स्थित है,उत्तर मे हिमालय और तीन तरफ से हिन्द महासागर और उसकी दो भुजाएँ बंगाल की खाड़ी और अरबियन सागर से क्रमश: द ०,पू ०,और प ० से घिरी हैं। भारत एक गाँव प्रधान तथा कृषि प्रधान देश है ।.शहरों की सभ्यताएं समयानुसार परिवर्तित एवं विघटित होती रही है ,परंतु ग्राम की सभ्यताएं चिरस्थायी रही है इसका उदाहरण सिन्धु घाटी की सभ्यता है जिसका विनाश हो गया पर आर्यो की सभ्यता ग्रामीण होने के कारण अपने बदले हुये रूप मे आज भी विद्यमान है।

गोआ राज्य के उत्तरी गोआ जिले मे स्थित,जुआरी नदी तट के किनारे स्थित गाँव नावशी की सामजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का सर्वेक्षण अधोलिखित है ।

सर्वेक्षण की आवश्यकता

किसी भी विधा मे खासकर सामजिक विषयों मे; सर्वेक्षण की आवश्यकता अत्यंत आवश्यक अवयव के रुप मे जरुरी है।भाषा भी अत्यंत समाजिक होती है इसीलिए भाषा के साथ-साथ भाषा विशेष के साथ जुड़े हुए मनुष्यो का परिवेश

उनका समाजिक,सांस्कृतिक और आर्थिक के साथ राजनीतिक पहलुवों को जानना नितांत आवश्यक है।भारत वर्ष मे विविधता का समुद्र दिखायी देता है जो अगोचर है।सम्पूर्ण विश्व मे इस प्रकार की विविधता का अन्यत्र कहीं दर्शन दुर्लभ है।सर्वेक्षण के माध्यम से कई प्रकार के रहस्यो पर से परत हट जाती है।मनुष्य किस प्रकार जीवन यापन कर रहा है।वह वर्तमान के प्रति कितना सजग है।प्रकृति और पर्यावरण के बारे मे कितना संवेदनशील है उसकी राजनीतिक चेतना कैसी है।उसकी धार्मिकता किस प्रकार की है।उसकी अपेक्षाएँ सरकार और समाज से कैसी है।आगे आने वाली संतति के विषय मे उसका सोच किस तरह है ।आधुनिक वैज्ञानिक संसाधनो का वह कितना उपयोग करता है इसका भी हमे अंदाजा लग जाता है।पूर्वजो और वर्तमान संतति मे मूलभूत बदलाव किस प्रकार हुये और पर्यावरण और जलवायु मे कैसे बदलाव

दर्ज हुये इस प्रकार सर्वेक्षण एक बहुआयामी परिणाम देने वाला सुफल कार्य है जो एक दिशा निर्देशक और मार्गदर्शक का कार्य करता है।नावशी गाँव का सर्वेक्षण गाँव के समाजिक-चेतना,राजनीतिक जागरुकता और समान्य जानकारी के लिये अनिवार्य है।भाषा का विकाश ,और कितने तरह की भाषायें गाँव मे बोली जा रही है इसका भी पता सर्वेक्षण के माध्यम से लगाया जाता है।

1. **नावशी गाँव का परिचय**

- गोआ राज्य, भारत के 28 राज्यो मे से एक राज्य है जो कर्नाटक और महाराष्ट्र दोनो राज्यो से घिरा हुआ है ।महाराष्ट्र का सिन्धुदुर्ग तथा कर्नाटक का बेलगवी तथा उत्तर कन्नड़ जिलों से गोआ की सीमा रेखा लगती है।गोआ राज्य दो जिलों मे विभक्त है।इसकी राजधानी पणजी उत्तरी गोआ जिले मे स्थित है ।

उत्तरी गोआ जिले के नावशी ग्राम को समाजिक और अर्थिक सर्वेक्षण के लिये चुना गया है।यह ग्राम बामबोली और दॉनापाल के बीच में गोआ विद्यापीठ के किनारे तलेगाँव पठार के नीचे जुआरी नदी और रत्नाकर के मिलनस्थल पर स्थित है।गाँव अत्यंत सुन्दर,शांत और मनोरम दिखाई देता है।गाँव में अन्य समीपवर्ती राज्यो के गाँवो की तुलना मे अधिक शहरीकरण दिखायी देता है।भरतीय ग्राम के कुछ पहचान होते है।जैसे पशुओं का चारागाह,दुग्ध उत्पादन,मत्स्य पालन तथा कृषि कार्य ।नावसी ग्राम मत्स्य उत्पादन और जुआरी नदी के अन्य समुद्री जीवों की उत्पादकता पर निर्भर है ।अन्य कृषि कार्य अथवा साग-सब्जी की संभावना ,गाँव की भौगोलिक बनावट तथा ग्रामीणो के अरुचि के कारण दिखायी नही देती है ।ग्रामीणो के माध्यम से पता चला की विगत दो दसको मे ग्राम का स्वरूप अत्यंत बदल चुका है ।गाँव मे बावड़ी के इस्तेमाल मे अत्यंत कमी आयी है।लोग नल का उपयोग करते दिखायी देते है।पुराने मिट्टी के मकान अब दिखायी नही देते,बल्कि अब पक्के आधुनिक मकानों का बाहुल्य है।लोगो के माध्यम से ज्ञात हुआ की दिलीप मामरे नावशी ग्राम के भाटकार (जमींदार) थे ।कई व्यक्तियों के पूर्वज गाँव में गोआ के विभिन्न भू-भागो से आकर नावशी गाँव मे बस गये थे ।जैसे खांडेपर,फोन्डा,इत्यादि स्थानो से आये लोगो का पता उनसे संवाद के माध्यम से पता चला ।गाँव मे सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना भरपूर प्रवाह दिखायी देता है।यह गाँव अत्यंत तीव्र गति से हो रहे शहरीकरण के प्रभाव से अपने को मुक्त रखने के लिये प्रयत्नशील है जिसका उदाहरण मरीना वे प्रोजेक्ट का दीर्घकालिक विरोध एवं अपने संस्कृति को तथा अपने प्राथमिक परंपरागत मत्स्य उद्योग को बचाने के फलस्वरुप प्रकट होता है ।

गाँव मे हिंदी भाषा एवं जागरुकता

भारत वर्ष मे सबसे अधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा का गौरव हिंदी भाषा को प्राप्त है।नावशी ग्राम की भाषा कोंकणी है जो गोआ राज्य की भाषा है ।कोंकणी भाषा सम्पूर्ण कोंकण प्रदेश जिसमे आधुनिक महाराष्ट्र का अरब सागर तटीय भाग और कर्नाटक का तटीय भाग और कुछ पस्चिमी घाट के भागो मे बोली जाती है इसकी लिपि हिंदी और मराठी की तरह देवनागरी ही है ।गाँव की लगभग जनसंख्या हिंदी भाषा मे सहजता महसूस करती है ।छोटे बालको मे हिंदी का स्पष्ट और धाराप्रवाह बोली देखी का सकती है ।कई लोगो से संवाद के समय हिंदी मे ही वार्तालाप हुई ।हिंदी, गाँव के लोग अन्य प्रांतीय लोगो से, एक योजक भाषा के रूप मे इस्तेमाल करते है ।नावशी गाँव के लोग हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप मे उपयोग करते है।गाँव के अधिकतम लोग अब पढे लिखे है ,कुछ बुजुर्ग लोगो को छोडकर ।देश दुनिया के समसामयिक विषयों के प्रति (जागरुकता मे) गाँव के लोगो का जुड़ाव देखने को मिला ।

गाँव की जनसंख्या एवं समाजिक परिवेश

नावशी गाँव की जनसंख्या लगभग 550 के करीब है।गाँव की आबादी का नब्बे प्रतिशत लोग अनुसूचित जनजाति के लोग है जो गण्डा जनजाति से ताल्लुक रखते है।ये कानकोनकर उपनाम अपने नाम के आगे लगाते हैं ।गाँव मे एक आंगनवाड़ी माँ सातेरी मन्दिर के ठीक सामने है। सर्वेक्षण के समय तीन शिशु मिले जिनकी उम्र 5 के अंदर थी।इसमे दो शिशु प्रवाशी मजदूरों के थे ।ग्रामीणों को सरकारी विद्यालयों मे,अपने शिशुवो और बालको को तालीम देने का उत्साह कम दिखाई दिया ।वे निजी विद्यालयों मे नामांकन कराना अधिक उचित मानते है।गाँव नदी के किनारे स्थित होने के कारण कभी-कभी डेंगू अथवा अन्य परिजिवी से संक्रमण का भी खतरा ग्रामीणों को सहना पडता है।स्वच्छता का गाँव में विशेष ध्यान दिया जाता है ।ग्राम पंचायत की तरफ़ से कूड़ा प्रबंधन का कार्य किया जाता है गीला अपशिष्ट को सूखे से अलग रखने का प्रचलन भी दिखाई देता है।जल संसाधन की बात की जाय तो ग्रामीणो के पास नल की व्यवस्था प्रत्येक घर मे है ।हर घर नल की योजना सत प्रतिसत गाँव मे दिखायी देती है।कुछ ग्रामीणो का अनुरोध था की उन्हे 24 घन्टे जल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाय ।परंपरागत जल स्रोतो का उपयोग बिलकुल बंद हो चुका है।किसी धार्मिक प्रयोजन अथवा नल के जल प्रवाह मे व्याधि उत्पन्न होने की दिशा में त्याज्य बावड़ी का उपयोग किया जाता है ।आंगनवाड़ी मे केवल तीन शिशुवो का मिलना हमे अचंभित करने वाला था जिसमे दो शिशु दूसरे प्रदेश से आये मजदूर के थे ।लोगो मे स्वास्थ तथा अध्ययन और अध्यापन की ललक दिखायी नही देती है।कुछ लोगो मे भारतीय परम्परा के गुण दिखायी देते है।सर्वेक्षण के समय इनके समाजिक व्यव्हार को जानने का अनुभव हुआ ।कुछ लोगो ने परम्परा अनुसार आतिथ्य की तरह सत्कार किया और कुछ ने प्रतिकूल व्यवहार से यह जाहिर किया की यह समाज प्राचीन समाज न होकर प्राचीन और आधुनिक समाजिक मूल्यो का सम्मिश्रण कर चुका है।

गाँव की व्यवसायिक एवं आर्थिक स्थिति

नावशी ग्राम मुख्यतया मत्स्य उद्योग पर निर्भर है।इस गाँव मे अन्य तरह की कृषि अथवा पशुपालन या दुग्ध उत्पादन से सम्बंधित कोई स्त्रोत नही है ।गाँव मुख्यतया अनुसूचित जनजातियो से बसा हुआ है इसलिए कुछ लोगो को सरकारी लाभ भी मिला जिससे कुछ लोग अगल-बगल सरकारी निकायो और कुछ लोग व्यक्तिगत संस्थानो मे कार्यरत है

।महिलायें भी रोजगार के मामले मे पीछे नहीं है वे भी सरकारी या गैर-सरकारी निकायो मे कार्यरत हैं ।गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारो की संख्या मे गिरावट दर्ज की गयी है।मत्स्य पालन और उसके पकड़ने के लिये सरकारी योजनाओ का लाभ भी ग्रामीणो को मिल रहा है।चूँकि परंपरागत मछुहारा होने के नाते गावँ के कुछ लोग विशेष अनुभवी है ।पहले नाँव को हाथ से संचालित किया जाता था जिससे मत्स्य उत्पादकता मे कमी था।पर वैज्ञानिक तरीके से मत्स्य पकड़ने की कला भी ग्रामीण जानते है।अब मोटर युक्त नाँव का भी संचालन हो रहा है जिसका प्रभाव मत्स्य उत्पादकता पर देखा जा सकता है।जुआरी नदी के मत्स्य विविधता को मछुहारा समुदाय भलीभांति जनता है,इस नदी मे लगभग दो सौ तरह के समुद्री जीव पाये जाते है।मानसून के जाने के फलस्वरुप मत्स्य सम्पदा मे इजाफ़ा होता है।अक्टूबर से जनवरी के बीच, सर्वाधिक लाभ मछुहारा समुदाय को होता है।मछली उत्पादकता अप्रैल और मई मे बहुत कम हो जाती है।जुआरी नदी मे ग्रामीणो का भू -स्थल की तरह जल का भी बटवारा होता है ।नावशी गाँव का व्यक्ति दोना पाल की ओर नही जा सकता मछली पकड़ने के उदेश्य से क्योकि सभी ग्रामो का पडोषी गाँव के साथ एक तरह का सौमा रेखांकन होता है ।भावी पीढ़ी का परंपरागत मछली पकड़ने के व्यापार से मोह भंग हो रहा है वे झारखंड एवं उड़ीसा के मजदूरों पर निर्भर होते जा रहे है, और कुछ युवा अन्य कार्यों मे संलग्न है। सर्वेक्षण के दौरान कई युवा ऐसे मिले जो व्यवसायिक ज्ञान प्राप्त किये है, जैसे वकालत के पेशेवर,अभियांत्रिकी तथा औधोगिक पेशेवर गाँव मे मिले ।ग्रैंड हयात पंच सितारा होटल बगल मे है पर उसमें ग्रामीणो को अधिक रोजगार नही मिला है, जिसका उन्हे मलाल है ।कुछ ग्रामीण गोआ विश्वविद्यालय मे कार्यरत है और कुछ समुद्र विज्ञान संस्थान में हैं ।मरीना वे प्रोजेक्ट जो पर्यटन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है वह 2010 से ही ग्रामीणों के विरोध के कारण लंबित है ।

सांस्कृतिक परिवेश और लोक संस्कृति

गोआ राज्य की यात्रा सांस्कृतिक और राजनीतिक रुप से बहुत अधिक रही ।कदंब शासनकाल मे (मुख्यरुप से मयुर्शर्मा के) गोआ की जनता अत्यंत धार्मिक और वेदिक परम्परा का अनुयायी तथा वाचित और अनुश्रुति के माध्यम से वेदो पुराणो और आरण्यको के पठन -पाठन मे लगी थी ।गोआ के गाँव अपने आप मे आत्मनिर्भर थे ।कृषि और गायों की विशेष इज्जत थी ।मध्यकाल मे विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद गोआ की स्थिति बदतर होना शुरु हो गयी ।गोआ का बीजापुर के सुल्तान के अधीन होना, गोआ मे मुसलमानो के आवागमन का प्रारंभ माना जाता है।मुसलमानो के सम्पर्क से गोआ की जनता का नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से अवमूल्यन प्रारंभ हो जाता है। तटीय राज्य होने के नाते पुर्तगालियों के निगाह मे आ जाता है ।पुर्तगाली केरल और मलाबार तट की अपेक्षा गोआ को अपना प्रशाशनिक केंद्र बना लेते है।वे बीजापुर के सुल्तान से गोआ को अधिग्रहित कर लेते है और यही से प्रारंभ होता है गोआ की संस्कृति और सभ्यता का विनाश ।पुर्तगाली गोआ को अपने देश पुर्तगाल के अनुकूल बनाना प्रारंभ कर देते है।वे यहा के अनुसार कोई परिवर्तन नही करते है। गौ मांस का सेवन,मदिरा और अन्य तरह के कुकृत्यो का समावेश गोआ के जनमानस मे प्रारंभ हो जाता है।जो लोग धर्मावलंबी थे वे सुदूर जंगलो मे पलायन कर जाते है।जो विधर्मी हो जाते है उनसे पुर्तगालियों का रोटी-बेटी का संबंध हो जाता है ।कोई केंद्रीय सत्ता न होने के कारण जनता बेवस थी।फिर भी वेदिक परम्परा और संस्कृति लोगो के मन मे जीवित थी ।माँ गौला देवी,तम्ड़ी -सुर्ला के महादेव ,मंगेशी,श्री स्थल के मल्लिकार्जुन तथा चन्द्रपुर के शिव का मन्दिर ,पर्वत परोडा के चन्द्रेश्वर भूतनाथ इत्यादि सनातन परम्परा के दृढ स्तम्भ है जो हजारो वर्षो से खड़े है।नावशी गाँव पर भी उपरोक्त संस्कृतिक एवं धार्मिक प्रभाव देखने को मिला।

पुर्तगाल के उपनिवेश के कारण गोआ राज्य अन्य राज्यो के अपेक्षा कुछ भिन्न संस्कृतिक एवं समाजिक तरह का प्रतीत होता है ।नावशी गाँव मे भी पुर्तगाली संस्कृति के अवशेष मिलते है।पुर्तगाली अन्य युरोपियों की तरह केवल व्यापार पर केंद्रित नही थे ,वे गोआ को हिन्दू बाहुल्य नही देख सकते थे ।बीजापुर के सुल्तान से गोआ को ले लेने के बाद अल्बूकर्क जो उस समय पुर्तगाल का प्रतिनिधि था उसने बहुत बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन करवाया।सदियों से चली आ रही परंपरा को धर्म परिवर्तन के माध्यम से तोड देना पुर्तगालियों का सबसे निकृष्ट कर्म था ।गरीबों का धर्म परिवर्तन बल-पूर्वक कराया जाता था और अमीरों को लालच देकर ।इस प्रकार का कुचक्र पुर्तगालियों ने नावशी ग्राम के कुछ मछुआरों के साथ किया।कुछ के नाम विचित्र लगे जैसे सुनील रोदृगस जो पूछने पर बताये की वे फिर से हिन्दु धर्म को धारण किये ।वाचित संस्कृति जो हजारो वर्षो से चली आ रही थी ,उपनिवेशित समय मे डगमगायी पर गोआ को भारत के अभिन्न अंग हो जाने के उपरांत फिर से अपनी सभ्यता-संस्कृति का पुनरुद्धार हुआ ।नावशी गाँव के अनुसूचित जन जाति समुदाय के कुछ प्रमुख उत्सव इस प्रकार है।

जागर ÷गावड़े जनजाति का प्रमुख नृत्य है ।जागर का अर्थ जागरण होता है इस पर्व मे सारी रात जागरण होता है ।पुरुष महिलावो के परिधान पहन कर नृत्य करते है । भजन और कीर्तन भी किया जाता है।कई तरह के भजन सुनने को मिले ।भजन गायक महोदय से हमारी भेट अविस्मरणीय रहेगी ।उनके भजन मराठी और कोंकणी भाषा मे थे ।उनके भजन का आधार पौराणिक था ।एक भजन के दौरान ,भावुकता के कारण गायक महोदय बार-बार करुणा अवस्था मे हो जाते थे ।उनके गायन मे एक प्रसंग आता है जिसमे माता सीता का अपहरण रावण के द्वारा कर लिया जाता है और भगवान राम लोगो से अपनी पीडा व्यक्त करते है।इस प्रसंग के बाद सर्वेक्षण के सभी सदस्यों के नेत्र भींग गये।इससे यह स्पष्ट है की भक्ति का रस भारतीय समाज मे किस प्रकार से समाहित है।नावशी गाँव के लोग बेहद धार्मिक और इश्वर सत्ता को मानने वाले और कोमल हृदय के जीव है।देवी पूजन,मातृ शक्ति की वन्दना मे बंगाल से कम नही है ।गायक महोदय के गायन के दौरान हमे प्रतीत हुआ की हम नावशी ग्राम मे न होकर अयोध्या या पन्दरपुर है ।गाँव के कम लोग ही इस तरह की जानकारी रखते है ,इसका कारण ब्यस्त जीवन और भौतिक जगत के प्रति अधिक जुड़ाव है।लोगो मे अन्य हिन्दू पर्वो को भी निष्ठा से मनाते है । तबला तथा पेटी एवं घूमट आदि वाद्य यंत्रो का प्रयोग नृत्य के दौरान जागर मे करते है।

शिग्मोत्सव÷ शिग्मोत्सव का त्योहार अत्यंत लुभावन होता है इसमे तरह-तरह के परिधान पहन कर घर-घर जाते है यह पर्व बहुदिवसीय होता है।यह पूर्णिमा को शुरु और पांच दिवस मे समाप्त होता है।

लोग इन दिनो शाकाहारी होते है ।

घर मे पूजा- पाठ करते है एक दूसरे से मेल-मिलाप करते है ।

नावशी गाँव की प्रमुख समस्याएँ

नावशी गाँव की प्रमुख समश्या वहाँ पर बड़े व्यापारिक समुदायो द्वारा ग्रामीण लोगो के जमीनो का अतिक्रमण है ।गाँव के लोग दिलीप नामक जमींदार के जमीन मे बसे हैं ।खैर अधिकांश लोगो ने भाटकार (जमींदार) की प्रशंशा की है।मरीना वे प्रोजेक्ट के आने से गाँव वाले विगत चौदह वर्षो से इस उपक्रम के खिलाफ़ एकजुट हो कर संघर्ष कर रहें है ।यदि इसका कोई बहुत बड़ा जनहित का विषय न हो तो इसे रोक कर सरकार परम्परागत मछुआरों का सहयोग करे ।पेय जल का नलो मे संचालन की समयावधि मे इजाफ़ा अपेक्षित है ।प्राथमिक स्वास्थ केंद्र की भी आवश्यकता पर ग्रामीणो ने बल दिया जिससे मातृत्व और शिशुत्व की देखरेख मे सहायता मिलेगी और अन्य प्राथमिक व्याधियों का निस्तारण त्वरित हो सकेगा ।ग्रामीणो की सरकारी निकायों से उनकी शीथिलता के प्रति आक्रोश है वे जागरुकता के अभाव मे किसी भी सरकारी लाभकारी योजना के लाभ से वंचित रह जाते है ।सरकारी स्कूलों को आत्म मूल्यांकन

करना चाहिये ।ग्रामीणो मे गैर-सरकारी विद्यालयों मे अपने बालको या बालिकाओं को भेजना सहज एवं विश्वसनीय लगता है।अगर गाँव मे सरकार विद्यालयों की स्थितियों के बारे मे चिंतन करे और उनका समयानुकूल उन्नयन करे जिससे ग्रामीणो की विद्यालयों के प्रति आसक्ति हो और ग्रामीणो को ,अपने बालको को सरकारी विद्यालयों मे भेजने पर कोई संदेह न हो ।ग्रामीणो को तीव्र शहरीकरण के प्रति एक मलाल है वे विकास के नाम पर गाँव का शहरीकरण नही होने देना चाहते ।गाँव मे कई ऐसे लोग मिले जो बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे ।वे भावी संतति से अपने पूर्वजों के संजोये हुये धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों को बचाने की और उन्हे संरक्षित करने की पेशकश करते है ।गोआ राज्य कितना धार्मिक और सनातन परम्परा का अनुयायी था इसका अनुमान ग्रामीणो से संवाद के दौरान ज्ञात हुआ।राम और माता सीता की कहानी गीत के माध्यम से सुनाते हुये एक बुजुर्ग व्यक्ति का अश्रु वर्षा होने लगता है।उसके लोचन भक्ति रूपी उदधि से उत्प्लावित होने लगते है।ग्रामीणो को उनके समाजिक एवं सांस्कृतिक मामलो मे स्वतत्र रहने देना चाहिये जिससे उनकी स्वायतता बनी रहे।

नावशी गाँव का पर्यावरण

नावशी गाँव का पर्यावरण जल स्रोत के समीप होने के कारण आकर्षक है।ऊपर तालीगओ पठार है।वहाँ वन सम्पदा एवं समुद्र तट होने के कारण पर्यावरण उष्ण कटिबंधिय है ।नारियल और काजू के वृक्ष अधिक है।नावशी गाँव के इर्द-गिर्द अनेक पर्यटन से सम्बंधित अधिष्ठान है।गाँव मे इन व्यापारिक अधिष्ठानो के हस्तक्षेप के कारण गाँव का अनेक आयामो से संकुचन हो रहा है।ग्रामीणो से वार्तालाप के दौरान तापमान पर बात करने पर पता चला की तापमान मे पहले की अपेक्षा अधिकता हुई है।ग्रामीणो के माध्यम से इस बात की भी पुष्टि हुई कि जुआरी नदी मे जैव विविधता को नुकसान हुआ है।मछलियों की कुछ प्रजातियाँ जो कुछ दशको पहले पायी जाती थी ,पर अब उसका दर्शन दुर्लभ हो चुका है।पेड़ो की संख्या मे दिन प्रति दिन गिरावट दर्ज की जा रही है ।सरकार की बहुउद्देशीय परियोजनाएं और पर्यावरण को नुकशान करने वाले करार गाँव के बहुआयामी कमजोरी के कारण होते है। पर्यावरण को नष्ट करके किया गया विकाश एक दिन विनाश का करण बनता है,जिसकी आपूर्ति करना कालान्तर मे असम्भव है।नावशी गाँव के लोगो मे नये पौधारोपण के उत्साह मे कमी देखी गयी।पुराने अनावृत बीजी वनों का कटाव और उनके न होने का प्रभाव गाँव मे औसत तापमान मे बढ़ोत्तरी और असंयमित वर्षा के रुप मे दिखायी दे रहा है।गाँव मे अन्य घरेलू जानवरो की संख्या कम है ।केवल कुत्ते और बिल्लियाँ ही है।गाय,भेण बकरी इत्यादि दुग्ध प्रधान पशुवो का अभाव है।समुद्री जैव विविधता के साथ-साथ स्थलीय जैव विविधता मे भी कमी देखी जा रही है ।नये नारियल के पेड़ो को कोई नही लगा रहा है गृह निर्माण और अन्य विकाशपरक कार्यो के लिये वनो का सफाया किया जा रह है।

रिपोर्ट का निष्कर्ष

गाँव मे सर्वेक्षण के समय तरह-तरह के अनुभव हुये ।जैसे एक पुरातत्वविद् उत्खनन के उपरांत प्राप्त हुये सामग्री का समय एवं कालानुक्रमिक तरीके से व्यवस्थित करता है उसी प्रकार हमे जो कुछ गाँव मे मिला उसका हमने अध्ययन किया ।हर एक उम्र के व्यक्तियों का अलग-अलग नजरिया और अनुभव था।कुछ लोगो के लिये उनके पूर्वजो से प्राप्त सांस्कृतिक धरोहरों का महत्व बहुत अधिक था।कुछ लोगो का मत आज के वैज्ञानिक समय के अनुकूल था जबकी कुछ इसके विपरीत परवर्ती समय के साथ खड़े दिखाई देते है।गाँव मे एक होली क्रॉस भी है जिसका एतिहासिक दृष्टिकोण से महत्व है।दो मन्दिर गाँव मे है ,गाँव मे प्रथम मन्दिर माँ सातेरी का है वहाँ पर उत्सवों का आयोजन किया जाता है।लोगो को एक भय है की मरीना प्रोजेक्ट आने से वे विस्थापित हो जायेंगे और उनका वर्षो का रहनेवाला स्थान ले लिया जायेगा जिसका विरोध वे करते आ रहे है।गाँव मे जागर,शिगमा,डोलो आदि का विशेष आयोजन किया जाता है जो पुरे गोआ मे संस्कृतिकर्मियों के लिये प्रेरणा का विषय है।